सांख्य एवं आयुर्वेद के परिपेक्ष में पुरुष विवेचन

जितेन्द्र कुमार मौर्य[1] & डॉ. परमेष्वरप्प एस्. ब्याडगी[2]
[1]षोध छात्र, विकृति विज्ञान विभाग, आयुर्वेद संकाय.
[2]एसो. प्रोफेसर, विकृति विज्ञान विभाग, आयुर्वेद संकाय.

Received: May 23, 2018 Accepted: July 03, 2018

ABSTRACT *सांख्य को द्वैतवादी दर्शन माना जाता है। इस जगत् में त्रिगुणात्मक अचेतन तत्त्व प्रकृति का अंश है और इससे अलौकिक तत्त्व चेतन है। सांख्य में पुरुष गुणों से हीन तथा प्रकृति के विकारों का द्रष्टा मात्र है। प्रकृति व पुरुष अनादि, अनन्त, अलिं, निराकार, नित्य और महान से भी महान हैं। सांख्य में पुरुष तत्त्व को न तो प्रकृति और न ही विकृति माना गया है क्योंकि यह पुरुष तत्त्व न तो किसी तत्त्व से उत्पन्न होता है और न ही किसी तत्त्व को उत्पन्न करता है, इसीलिए पुरुष को अनुभयात्मक कहा गया है। चरकसंहिता में आत्मा, इन्द्रिय, मन और अर्थ के समुदाय को पुरुष कहा गया है। यह आत्मा ज्योतिःस्वरूप, चिदानन्दरूप, नित्य, निःस्पृह और निर्गुण होता हुआ भी प्रकृति से युक्त होने से सगुण होकर जगत् को उत्पन्न करता है।*

Keywords: *पुरूश, प्रकृति, आत्मा, व्यक्त, अव्यक्त, षरीर इत्यादि।*

प्रस्तावना–

सांख्यदर्शन सबसे प्राचीन दर्शन है। सांख्य को द्वैतवादी दर्शन माना जाता है। इस जगत् में त्रिगुणात्मक अचेतन तत्त्व प्रकृति का अंश है और इससे अलौकिक तत्त्व चेतन है। सांख्य में पुरुष गुणों से हीन तथा प्रकृति के विकारों का द्रष्टा मात्र है। प्रकृति व पुरुष अनादि, अनन्त, अलि¯, निराकार, नित्य और महान से भी महान हैं।

वैदिक वाङ्मय में पुरुष का विवेचन कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण है। ऋग्वेद के दसवें मण्डल के दसवें सूक्त में पुरुष का आलंकारिक वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में पुरुष के हजारों शिर, हजारों नेत्र और हजारों चरण बताए गये हैं। पुरुष पृथ्वी को चारों ओर से व्याप्त किया है। पुरुष के एक चरण में सारा ब्रह्माण्ड व्याप्त है और पुरुष के तीन अमृत भरे चरण ऊपर द्युलोक में स्थित है।

सांख्य में पुरुष तत्त्व को न तो प्रकृति और न ही विकृति माना गया है क्योंकि यह पुरुष तत्त्व न तो किसी तत्त्व से उत्पन्न होता है और न ही किसी तत्त्व को उत्पन्न करता है, इसीलिए पुरुष को अनुभयात्मक कहा गया है।

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः।। सां०का० ३।।[1]

मूल प्रकृति अर्थात् प्रधान अविकृति है। प्रधान किसी अन्य का विकार नही है। इसलिए उसे मूल कहा गया है। महद्, अहंकार पञ्च तन्मात्राएँ प्रकृति भी है और विकृति भी है। एकादश इन्द्रिय व पञ्चमहाभूत केवल विकृति है। पुरुष तो कूटस्थ, नित्य, अपरिणामी होने से न प्रकृति है और न विकृति है।

चरकसंहिता में पुरुष के विषय में कहा गया है–

आत्मेन्द्रियमनोर्थानां योऽयं पुरुषसंज्ञकः।
राशिरस्यामयानां च प्रागुत्पत्तिविश्चिये।। च०सू० २५/४।।[2]

चरकसंहिता में आत्मा, इन्द्रिय, मन और अर्थ के समुदाय को पुरुष कहा गया है। यह आत्मा ज्योतिःस्वरूप, चिदानन्दरूप, नित्य, निःस्पृह और निर्गुण होता हुआ भी प्रकृति से युक्त होने से सगुण होकर जगत् को उत्पन्न करता है।

पुरुष के पर्याय–

श्री ईश्वरकृष्ण जी ने अपने सांख्यकारिका में पुरुष के पर्याय का वर्णन नहीं किया है परन्तु तत्त्वसमास सूत्र से व्याख्याकार भावागणेश ने पुरुष को आत्मा, पुमान्, पुद्गलजन्तु, जीव, क्षेत्रज्ञ, नर, कवि, ब्रह्म, अक्षर, प्राण, ज्ञ, य, क, स, एक आदि पर्याय बताए हैं। महाभारत के शान्तिपर्व के अध्याय ३१८ में पुरुष को अविश्व, अश्व, मित्र, ज्ञेय, ज्ञ, अतपा, अतिसूर्य, विद्या, वेद्य, अचल आदि पर्याय बताए गये हैं।

पुरुष की सत्ता–

सांख्य में पुरुष की सत्ता के सन्दर्भ में कहा गया है–

संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च।। सां०का० १७।।[3]

प्रवृत्ति से भिन्न पुरुष की स्वतन्त्र सत्ता की सिद्धि के लिए ईश्वरकृष्ण ने कहा है कि पुरुष आत्मा है। संघात के परमार्थ होने से, क्योंकि संघात परमार्थ के लिए होता है। इस जगत में जो भी वस्तु या संघात है वह सब

परमार्थ के लिए है। जैसे– पलंग, रथ, मकान इत्यादि। इसी प्रकार शरीर व महदादियों का भी संघात परमार्थ के लिए ही है। गुणत्रय के अभाव होने से भी पुरुष की सत्ता स्वीकार की जाती है। षष्ठितन्त्र में कहा गया है ''पुरुष से अधिष्ठित प्रधान की प्रवृत्ति होती है।'' इससे यह ज्ञात होता है कि पुरुष और भोक्ता होने से पुरुष का अस्तित्व सिद्ध किया जाता है। षड्रसों से युक्त भोजन को देखकर यह सिद्ध किया जा सकता है कि जरूर इनका कोई भोक्ता होगा जिसके लिए यह भोजन है। इसी प्रकार व्यक्त और अव्यक्त को देखकर यह बात सिद्ध होती है कि निश्चय ही इनके अतिरिक्त परमात्मा पुरुष भोक्ता है, जिसके लिए कि व्यक्ताव्यक्त भोग्य है और भी लोगों की मोक्ष के लिए प्रवृत्ति होने से भी पुरुष का अस्तित्व सिद्ध होता है।

पुरुष बहुत्व–

सांख्यकारिका में पुरुष बहुत्व के सन्दर्भ में कहा गया है–

जननमरणकरणानां प्रतिनियमादयुगपत्प्रवृत्तेश्च।
पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव।। सां०का० १८।।[४]

सभी शरीरों में एक ही आत्मा की उपस्थिति मानने पर जन्म और मृत्यु को स्पष्ट नहीं किया जा सकता क्योंकि सभी शरीरों के अधिष्ठाता एक ही पुरुष को मानने से एक पुरुष के उत्पन्न होने पर सबकी उत्पत्ति, एक के मरने पर सबकी मृत्यु, एक के अन्धा होने पर सभी को अन्धा हो जाना चाहिए किन्तु ऐसा नहीं होता। इसलिए भिन्न–भिन्न पुरुष अर्थात् आत्मा है।

आयुर्वेद में पुरुष (आत्मा)–

आयुर्वेद में आत्मपद को तीन भागों में बांटा गया है– परम आत्मा, अतिवाहिक या सूक्ष्मशरीरयुक्त तथा स्थूल चेतन या कर्मपुरुष।

परम आत्मा–

आचार्य चरक ने परम आत्मा के बारे में कहा है–

अव्यक्तात्मा क्षेत्रज्ञः शाश्वतो विभुरव्ययः।। च०शा० १/६१।।[५]

इस अनादि परम आत्मा का कोई कारण नहीं है। चरक ने इस परम आत्मा को अव्यक्त अर्थात् इन्द्रियों से अज्ञेय, क्षेत्रज्ञ, शाश्वत अर्थात् उत्पत्ति एवं विनाश से रहित विभु एवं अव्यय कहा है।

परम आत्मा का लक्षण–

आचार्य चरक ने चरकसंहिता के शारीरस्थान में कहा है–

प्राणापानौ निमेषाद्या जीवनं मनसो गतिः।
इन्द्रियान्तरसञ्चारः प्रेरणं धारणं च यत्।। च०शा० १/७०।।[६]
देशान्तरगतिः स्वप्ने पञ्चत्वग्रहणं तथा।
द्रष्टस्य दक्षिणेनाक्ष्णा सव्येनावगमस्तथा।। च०शा० १/७१।।[७]
इच्छा द्वेषः सुखं दुखं प्रयत्नश्चेतना धृतिः।
बुद्धिः स्मृतिरहꣳकारो लि ानि परमात्मनः।। च०शा० १/७२।।[८]

प्राण, अपान, निमेष, उन्मेष, जीवन, मन की गति, मन का एक इन्द्रिय से दूसरी इन्द्रिय में जाना, प्रेरणा करना, धारणा करना, स्वप्न में दूसरे देश में जाना, मरण, दाहिनी आँख से देखी हुई वस्तु का बाईं आँख से 'वही है' यह ज्ञान करना, इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख, प्रयत्न, चेतना, धृति, ज्ञान, स्मृति और अहंकार ये परम आत्मा के लि है।

आतिवाहिक अर्थात् सूक्ष्म शरीर युक्त आत्मा–

चरकसंहिता में आतिवाहिक आत्मा के बारे में कहा गया है–

भूतानि चत्वारि तु कर्मजानि यान्यात्मलीनानि विशन्तिगर्भम्।
स बीजधर्मा ह्यपरापराणि देहान्तराण्यात्मनि याति याति।।

च०शा० २/३५।।[९]

सूक्ष्म शरीर से युक्त आत्मा शरीर के विच्छेद के साथ पृथक् हो जाती है एवं कर्मवश इसे पुनः सूक्ष्म शरीर मिलता है। मृत्यु के समय आत्मा इसी सूक्ष्म शरीर को लिए हुए बाहर निकलती है और जन्म के समय इसी सूक्ष्म शरीर के साथ नये शरीर में प्रवेश करती है। आत्मा का पूर्व देह से निकलना और नये देह में प्रवेश नहीं होता क्योंकि आत्मा तो सर्वव्यापक होने से न प्रथम शरीर को छोड़ती है और न नये शरीर में उसका प्रवेश ही होता है। वस्तुतः निष्क्रमण और प्रवेश इसी सूक्ष्म शरीर के होते हैं।

स्थूल चेतन या कर्मपुरुष–

आयुर्वेद में आत्मा के दो स्वरूप है। प्रथम में परम आत्मा और सूक्ष्म शरीर है। आत्मा का दूसरा स्वरूप मनुष्य, पशु–पक्षी आदि के चेतन शरीर है। मन, आत्मा तथा शरीर इन तीनों के संयोग को पुरुष कहते हैं। पुरुष

को निर्विकार परम आत्मा तथा 'सूक्ष्मशरीरयुक्त आत्मा' से भिन्न बोध के लिए कर्मपुरुष, राशिपुरुष, संयोगपुरुष, समुदायपुरुष, षड्धातुक पुरुष या चतुर्विंशति पुरुष कहते हैं।

पुरुषो राशिसंज्ञस्तु मोहेच्छाद्वेषकर्मजः।। च०शा० १/५३।।[१०]

मोह, इच्छा, द्वेष के कर्म से राशिपुरुष की उत्पत्ति होती है।

बुद्धीन्द्रियमनोऽर्थानां विद्यायोगधरं परम्।
चतुर्विंशतिको ह्येष राशिः पुरुषसंज्ञकः।। च०शा० १/३५।।[११]

पुरुष का मन जब तक तमोगुण एवं रजोगुण से आविष्ट रहता है उस समय तक मोह, इच्छा, द्वेष, प्रवृत्ति, धर्माधर्म और शरीर का क्रम अविच्छिन्न रहता है। आयुर्वेद के विवेचन में छः या चौबीस तत्त्वों का संयोग जिसे राशिपुरुष के नाम से जाना जाता है। सुख-दुःख, इच्छा द्वेष, प्रयत्न, प्राणवायु को धारण करना, अपान वायु को छोड़ना, मन, बुद्धि विचारणा, स्मृति, विज्ञान आदि गुण कर्म पुरुष के हैं।

निष्कर्ष-

आयुर्वेद में आत्मा को सर्वविद्यमान नहीं माना गया है। आत्मा को सभी जगह विद्यमान मानने पर पुरुष को नित्य मानना होगा। सांख्य में आत्मा को सभी जगह विद्यमान और नित्य माना गया है। आयुर्वेद के सिद्धान्तों से पुरुष नित्य है और सभी जगह व्याप्त नहीं है। शुभ-अशुभ, पाप-पुण्य कार्यों के कारण आत्मा पशु-पक्षियों, मानव एवं देवयोनि में प्रवेश करता है। इसका ज्ञान प्रमाणों से होता है। यह आत्मा अत्यन्त सूक्ष्म, चेतनायुक्त, शाश्वत और शुक्र तथा रक्त का संयोग होने से व्यक्त होता है और इसी पुरुष को पञ्चमहाभूत और आत्मा का संयोग होने के कारण षड्धात्वात्मक कहा गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उप्रेती,थानेषचन्द्र.सांख्यकारिका, वाराणसी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिश्ठान,१९९०;२३.
2. त्रिपाठी,डॉ०ब्रह्मानन्द.सूत्रस्थान२५/४,चरकसंहिता,खण्ड प्रथम.वाराणसी,चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन,२००९;४४१.
3. उप्रेती,थानेषचन्द्र.सांख्यकारिका, वाराणसी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिश्ठान,१९९०;८३.
4. उप्रेती,थानेषचन्द्र.सांख्यकारिका, वाराणसी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिश्ठान,१९९०;८८.
5. त्रिपाठी,डॉ०ब्रह्मानन्द.षारिरस्थान१/६१,चरकसंहिता,खण्ड प्रथम.वाराणसी,चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन,२००९;८०६.
6. त्रिपाठी,डॉ०ब्रह्मानन्द.षारिरस्थान१/७०,चरकसंहिता,खण्ड प्रथम.वाराणसी,चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन,२००९;८१२.
7. त्रिपाठी,डॉ०ब्रह्मानन्द.षारिरस्थान१/७१,चरकसंहिता,खण्ड प्रथम.वाराणसी,चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन,२००९;८१२.
8. त्रिपाठी,डॉ०ब्रह्मानन्द.षारिरस्थान१/७२,चरकसंहिता,खण्ड प्रथम.वाराणसी,चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन,२००९;८१२.
9. त्रिपाठी,डॉ०ब्रह्मानन्द.षारिरस्थान२/३५,चरकसंहिता,खण्ड प्रथम.वाराणसी,चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन,२००९;८५४.
10. त्रिपाठी,डॉ०ब्रह्मानन्द.षारिरस्थान१/५३,चरकसंहिता,खण्ड प्रथम.वाराणसी,चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन,२००९;८०७.
11. त्रिपाठी,डॉ०ब्रह्मानन्द.षारिरस्थान१/३५,चरकसंहिता,खण्ड प्रथम.वाराणसी,चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन,२००९;८०३.